स्रोत विज्ञान एवं टेक्नॉलॉजी फीचर्स

RNI REG. NO: MPHIN/2007/20200

बैरी मार्शल की बदबूदार सांसें

जूनियर डॉक्टर बैरी मार्शल इस बाबत आश्वस्त थे कि पेट में होने वाले अल्सर या छालों के लिए जो कारण बताया जाता है वह पक्के तौर पर सही नहीं हैं। चिकित्सा विज्ञान में पेट के अल्सर के लिए तनाव, मसालेदार भोजन और पेट में अम्ल की अधिकता को उत्तरदायी ठहराया जाता था। मार्शल को लगता था कि इस धारणा के पक्ष में कोई प्रमाण नहीं है।

मार्शल और उनके साथी पैथोलॉजिस्ट रॉबिन वारेन ने इसके लिए एक बैक्टीरिया हेलिकोबैक्टर पायलोरी को ज़िम्मेदार पाया। अन्य वैज्ञानिक इसे मानने को तैयार नहीं थे क्योंकि उनके हिसाब से कोई बैक्टीरिया पेट के अति अम्लीय वातावरण में जीवित ही नहीं रह सकता।

मार्शल ने अपने अनुभव से देखा था कि 100 में 80 अल्सर मरीज़ों में हेलिकोबैक्टर पायलोरी का संक्रमण होता है मगर इसे कार्य-कारण प्रमाण तो नहीं कहा जा सकता। अपनी बात को सिद्ध करने के लिए कि मार्शल को एक स्वस्थ वालंटियर की ज़रूरत थी जिस पर हेलिकोबैक्टर पायलोरी का असर परखा जा सके। इसके लिए सम्बंधित व्यक्ति की सहमति ज़रूरी थी। कुछ व्यक्तियों की सहमति पाने के पचड़े में न पड़कर मार्शल ने स्वयं खुद के ऊपर प्रयोग करने की ठानी। उन्होंने इसकी जानकारी अस्पताल की नैतिकता समिति को भी इस डर से नहीं दी समिति खुद पर प्रयोग के तरीके को अस्वीकार कर देगी। न उन्होंने अपनी पत्नी को कुछ बताया। उन दिनों वें रॉयल पर्थ हॉस्पिटल, ऑस्ट्रेलिया में कार्यरत थे।

प्रयोगशाला में एक तश्तरी में जमा हेलिकोबैक्टर का कल्चर मार्शल खुद ही पी गए। उम्मीद थी कि शायद सालों बाद उन्हें अल्सर होंगे परंतु वे हतप्रद रह गए कि महज कुछ दिनों बाद ही वे गंभीर रूप से बीमार पड़ गए। उन्हें उल्टियां शुरू हो गईं। मार्शल की पत्नी ने शिकायत की थी कि इस दौरान उनकी सांसों से बदबू आती रही। उनकी उल्टियों में अम्ल की जरा-सी भी मात्रा न थी। यानी पेट में कोई अम्ल नहीं था जो बैक्टीरिया को मार सकता। बैक्टीरिया बड़े मज़े में पेट में फल-फूल रहे थे और उनकी क्रिया के कारण बनने वाले पदार्थ ही बदबू पैदा कर रहे थे, जो सांसों से आ रही थी।

जब उनके पेट की बायोप्सी हुई तब पता चला कि उनके पेट में बैक्टीरिया का संक्रमण हुआ है और वो गैस्ट्राइटिस से पीड़ित हैं जिसका परिणाम अंततः अल्सर या छाले ही थे।

मार्शल और वारेन के इस मत को व्यापक पैमाने पर मान्यता मिलने में 8 साल और लगे। मगर उनके काम को अंततः वर्ष 2005 का चिकित्सा के नोबल पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

प्रकाशक, मुद्रक सी.एन. सुब्रह्मण्यम की ओर से निदेशक एकलव्य फाउण्डेशन द्वारा एकलव्य, ई-10 शंकर नगर, बी.डी.ए. कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.) से प्रकाशित तथा आदर्श प्राइवेट लिमिटेड, इंदिरा प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, ज़ोन-1 भोपाल (म.प्र.) 462 011 से मुद्रित। सम्पादकः डॉ. सुशील जोशी